



संयुक्त राष्ट्र शांति बहाली गतिविधियां

विश्व के देशों के लिए शांति सबसे अच्छा लक्ष्य है। शांति के बिना दूसरे सपनों जैसे आर्थिक और सामाजिक विकास को पाना बेहद कठिन है। शांति की और अधिक आवश्यकता बीसवीं सदी में हुई क्योंकि खतरनाक हथियारों के विकास ने युद्धों को काफी खूनी और विनाशकारी बना दिया। इससे भी बढ़कर देशों और लोगों पर युद्ध के नकारात्मक प्रभाव जड़ें जमा रहे थे। इसी कारण से विश्व के नेताओं ने युद्ध को रोकने और देशों के बीच शांतिपूर्ण संबंध बनाने के लिए परस्पर हाथ मिला लिए। यही वह कारण था कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई। संयुक्त राष्ट्र का निर्माण विश्व के कोने-कोने में शांति के लिए काम करने के लिए हुआ था। सच कहें तो, शांति इसका सर्वोच्चतम लक्ष्य है। वैसे तो संयुक्त राष्ट्र आज संसार की सबसे अहम संस्था है, जो विश्व शांति के लिए काम कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के कई अंग शांति के लिए काम करते हैं। सुरक्षा परिषद, महासचिव और महासभा के प्रयास प्रशंसनीय हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अब तक करीब 300 युद्ध हो चुके हैं, लेकिन यह संयुक्त राष्ट्र का प्रभाव ही है कि अब तक तीसरा विश्वयुद्ध नहीं हुआ।



उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए अपनाए गए अलग-अलग रास्तों की पहचान कर सकेंगे;
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा दो देशों के बीच मध्यस्थता के प्रयासों को समझ सकेंगे;
- संयुक्त राष्ट्र के कामकाज में शीतयुद्ध के प्रभाव की समीक्षा, खासकर शांति और सुरक्षा के संदर्भ में स्पष्ट कर सकेंगे;
- संयुक्त राष्ट्र की शांति कायम रखने की गतिविधियों के महत्व को समझ सकेंगे;
- शांति भंग करने वाले देशों के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए प्रतिबंधों को बता सकेंगे; तथा
- संयुक्त राष्ट्र के निरस्त्रीकरण प्रयासों को समझ सकेंगे।



31.1 कई प्रकार की गतिविधियां

संयुक्त राष्ट्र की विश्व शांति में भूमिका के कई पहलू हैं। इसके विविध अंग युद्धों को होने से रोकते हैं। यह देशों को सलाह देकर या उनको ऐसे मित्रतापूर्ण संबंध विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे विभिन्न देश एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में दखल न दें। साथ ही यह बिना बल-प्रयोग के देशों के मतभेद सुलझाने की भी बात करता है। इस लक्ष्य को पाने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने कई तरह के घोषणापत्र और प्रस्तावों को पारित किया है। सदस्य देशों को इनका पालन बाध्यकारी नहीं है, लेकिन इनका नैतिक प्रभाव काफी है, हालांकि, देशों के बीच युद्ध फिर भी होते हैं। इस तरह के मौके पर संयुक्त राष्ट्र ने लड़ाई को जल्द से जल्द रोकने के लिए काम किया है। उदाहरण के लिए, जब भारत और पाकिस्तान के बीच 1947 में युद्ध हुआ तो संयुक्त राष्ट्र ने सफलतापूर्वक दोनों ही देशों को लड़ाई रोकने के लिए मना लिया। दूसरी ओर संयुक्त राष्ट्र के कामों में यह भी अहम है कि खतरनाक हथियारों को नियंत्रित और नष्ट करके शांतिपूर्ण माहौल को विकसित किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों के मुख्यतः चार आयाम हैं, जिसने हमारी दुनिया को कहीं न कहीं थोड़ा शांतिपूर्ण बनाया है। वे हैं- 1. देशों के बीच ऐसी मध्यस्थता करना, जिससे वे सैन्य बल के इस्तेमाल के बिना ही किसी समझौते पर पहुंच सकें। 2. ऐसी शांति रक्षक गतिविधियों का संचालन करना जिससे लड़ने वाले देशों को अलग रखा जा सके ताकि बिना एक गोली चले ही शांति स्थापित हो जाए। 3. कुछ सदस्य देशों को समस्याग्रस्त क्षेत्रों में बलपूर्वक दखल देने की अनुमति देना और वहां शांति की पुनः स्थापना करना। 4. निरस्त्रीकरण संबंधी गतिविधियां जिसका लक्ष्य युद्ध के अस्त्रों जैसे बारूदी सुरंगों और रासायनिक हथियार वगैरह को पूरी तरह प्रतिबंधित करना या घटाना है।

संयुक्त राष्ट्र की इन चारों शांति संबंधी गतिविधियों में प्रत्येक के बारे में जानना महत्वपूर्ण है।

31.2 मध्यस्थता संबंधी गतिविधियां

संयुक्त राष्ट्र ने अनेक विवादों में मध्यस्थ की भूमिका निभाई है जिनमें कई बार सफलता मिली और कई बार नहीं भी।

मध्यस्थता किसी देश, व्यक्ति या संगठन की वैसी गतिविधि है जिससे वह किसी समस्या को सुलझाते हैं। मध्यस्थ सीधे तौर पर उस विवाद या समस्या से नहीं जुड़ा होता है। झगड़ रहे देशों के बीच मध्यस्थ को दोस्ताना और तटस्थ होना चाहिए। मध्यस्थता तभी शुरू की जा सकती है, जब समस्याग्रस्त पक्ष राजी हों। मध्यस्थ कोशिश करता है कि सभी पक्ष आमने-सामने बैठकर वार्ता करें, या समझौते के बिंदुओं को चिह्नित करने में उनकी मदद करता है। यह काफी कुशलता वाला लेकिन जटिल काम है, जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र को काफी बृहद अनुभव रहा है।

संयुक्त राष्ट्र परिषद ने 1950 में मध्यस्थों को कश्मीर समस्या को दोनों पक्षों की सहमति से सुलझाने के लिए भेजा था, लेकिन प्रयास फलदायक नहीं हो सके। 1962 में हुआ क्यूबा का मिसाइल संकट इसका एक अच्छा उदाहरण है, जब महासचिव यू थांत की मध्यस्थता ने अमेरिका और पूर्व सोवियत यूनियन के बीच सीधे तौर पर सैन्य कार्रवाई को टालने में मदद की। 1989 में संयुक्त राष्ट्र ने सफलतापूर्वक सोवियत सेनाओं की अफगानिस्तान से वापसी की संधि पर हस्ताक्षर कराए। इसी तरह की सफल मध्यस्थता 1991 में कंबोडिया संकट के समय की गई। अभी संयुक्त राष्ट्र दो दर्जन मध्यस्थों की सहायता से फिलहाल सोमालिया, साइप्रस, पश्चिमी, सहारा आदि में समस्या समाधान में मदद कर रहा है।

संयुक्त राष्ट्र सीमा विवाद के मामले पर प्रतिबंधित हथियारों के इस्तेमाल और दूसरी शिकायतों पर तथ्य खोजने या तटस्थ जांच में भी मदद करता है। अरब-इजरायल विवाद के मामले पर संयुक्त राष्ट्र ने 1969 में एक समझौते की रूपरेखा सामने रखी जिसमें इजरायल और फिलिस्तीन दोनों को ही सुरक्षित सीमाओं में रहने के अधिकार को माना गया। कई बार, इसके न्यायिक अंग अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने भी अपने फैसले



के तहत (उन शिकायतों पर जो देश इसके सामने लेकर आए) शांति स्थापना में मदद की। उदाहरण के लिए, 2003 में न्यायालय ने इजरायल की उस दीवार को अवैध करार दिया, जो वह फिलिस्तीनी कब्जे वाले क्षेत्र में बना रहा था, साथ ही उसे अवैधानिक और भड़काने वाला काम भी बताया। महासभा ने बाद में इजरायल को कोर्ट के फैसले का सम्मान करने की सलाह दी।

31.3 बाध्यकारी प्रतिबंध

संयुक्त राष्ट्र ने पहले हमेशा अबाध्यकारी तरीकों से देशों के बीच शांति बनाए रखने की कोशिश की है। इसका मतलब यह नहीं है कि संयुक्त राष्ट्र देशों को दी गई अपनी सलाह न मानने और विश्व शांति के लिए खतरा बनने पर कुछ कर नहीं सकता या उसने किया नहीं है। जैसा कि आप पहले ही पाठ 30 में जान चुके हैं कि सुरक्षा परिषद को किसी खतरनाक देश या सरकार के खिलाफ प्रतिबंध लगाने का अधिकार है जिससे बिना सैन्य या सशस्त्र कार्रवाई के ही शांति की पुनः स्थापना हो सके। सुरक्षा परिषद के फैसले के बाद ये असैनिक प्रतिबंध सभी सदस्य देशों द्वारा अनिवार्य तौर पर लागू किए जाते हैं।

‘प्रतिबंध’ वैसे कठोर कदम हैं जो उस देश को अलग-थलग और दंडित करने के लिए उठाए जाते हैं, जो शांति के लिए खतरा बन जाएं। इसका अर्थ सैनिक ताकत का इस्तेमाल करना नहीं है। सुरक्षा परिषद के असैनिक प्रतिबंध का मतलब लक्षित देश के बाकी विश्व से राजनयिक संबंध काट देने, हथियारों की खरीद-फरोख्त रोक देने, उस देश से किसी भी तरह के आयात-निर्यात (सभी तरह के सामान जैसे तेल, दवाएं वगैरह) को प्रतिबंधित कर देना, विदेशों में उसकी बैंक जमा को जब्त कर लेना है। ये कदम इस बात को सुनिश्चित करने पर जोर देते हैं कि लक्षित देश अपनी आपत्तिजनक गतिविधियों को तुरंत बंद कर दें।

संयुक्त राष्ट्र ने अब तक लगभग 25 बार इस तरह के बाध्यकारी असैनिक प्रतिबंध लगाए हैं। इस तरह के मामलों में पहला प्रतिबंध दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ था। दक्षिण अफ्रीका ने रंगभेद की अपनी नीति को खत्म करने के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के बार-बार के सलाह को मानने से और अश्वेतों, भारतीयों और इसी तरह की दूसरी नस्ल वाले लोगों के खिलाफ भेदभाव मिटाने से इनकार किया था। 1977 में दक्षिण अफ्रीका को मजबूर करने के लिए उसके हथियारों की आपूर्ति पर प्रतिबंध लगा दिया गया। दूसरे उपाय जैसे अंतर्राष्ट्रीय खेलों में शिरकत करने पर पाबंदी का भी सहारा लिया गया। दक्षिण अफ्रीका को आखिरकार विश्व की इच्छा के सामने झुकना पड़ा। ऐसा ही एक और उदाहरण इराक के खिलाफ 1990 में लगाए गए व्यापक प्रतिबंधों का है जो उसके खिलाफ पड़ोसी देश कुवैत पर हमला करने और उस पर कब्जा जमाने की वजह से लगे। तेल की खरीद-फरोख्त पर प्रतिबंध लगा दिया गया, खाद्य पदार्थ और दूसरी जरूरी चीजों से मना कर दिया गया, संचार और यातायात के साधन काट दिए गए और विदेशी बैंकों के खातों को बंद कर दिया गया। इस कार्रवाई का असर इराक और उसके लोगों पर लंबे समय तक रहा। इसी तरह संयुक्त राष्ट्र ने कई आतंकी संगठनों के खिलाफ भी प्रतिबंध लगाया है ताकि उनको किसी तरह की वित्तीय सहायता न मिल सके। यह कदम संयुक्त राज्य अमेरिका पर 11 सितम्बर 2001 को हुए आतंकी हमले के बाद उठाया गया। लेकिन हमें स्मरण रखना होगा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों से हमेशा इच्छित परिणाम नहीं निकले हैं। यह जान पड़ता है कि आतंकवादी प्रतिबंध के बावजूद गुप्त रूप से धन प्राप्त कर रहे हैं।



पाठगत प्रश्न 31.1

सत्य या असत्य लिखिए :

(क) संयुक्त राष्ट्र आज विश्व में शांति के लिए सबसे अधिक प्रतिबद्ध संगठन है।

(सत्य/असत्य)



- (ख) सदस्य देशों द्वारा विवादों के शांतिपूर्ण समाधान हेतु आग्रह करने वाले संयुक्त राष्ट्र की घोषणाओं एवं प्रस्तावों का बाध्यकारी प्रभाव है। (सत्य/असत्य)
- (ग) राष्ट्र संघ के मध्यस्थ को सफलता की उम्मीद हो सकती है बशर्ते उसे विवाद के सभी पक्षों का विश्वास प्राप्त हो। (सत्य/असत्य)
- (घ) 2003 में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने इजराइल की उस दीवार को अवैध और भड़काने वाला कदम करार दिया, जो फिलिस्तीनी कब्जे वाले क्षेत्र में बनाई जा रही था। (सत्य/असत्य)
- (ङ.) सुरक्षा परिषद द्वारा लगाए गए असैनिक प्रतिबंधों को लागू करना संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों के लिए अनिवार्य नहीं होते। (सत्य/असत्य)

31.4 सैन्य कार्रवाई के लिए अनुमोदन

संयुक्त राष्ट्र के लिए विश्व शांति इतना महत्वपूर्ण है कि इसके निर्माताओं ने आक्रमण रोकने तथा आक्रमण को टालने के लिए इसे सैनिक कार्रवाई तक का अधिकार दे दिया। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र के पास सदस्य देशों के योगदान से सेना बनाने की योजना थी। यह सेना संयुक्त राष्ट्र एवं महासचिव के अधीन रह कर आक्रामक देश के विरुद्ध लड़ने के लिए बननी थी, जो हो न सका। इस मसले पर अमेरिका एवं तत्कालीन सोवियत संघ के बीच गहरे मतभेद थे। इसलिए छह दशक के बाद भी आक्रामक देश के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के पास अपनी कोई सेना नहीं है। इसी कमजोरी के कारण संयुक्त राष्ट्र किसी आक्रामक देश के विरुद्ध स्वतः व स्वतंत्र रूप से सैनिक कार्रवाई नहीं कर सका।

शीतयुद्ध के कारण आक्रामक देश को दंडित करने में सदस्य देशों के बीच सहमति नहीं बन पाती। दोनों प्रबल विरोधी महाशक्तियां अपने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने को वीटो प्रयोग कर रोकते थे। अतएव शीतयुद्ध के दौरान सुरक्षा परिषद अक्सर अक्षम रहा। इसके बावजूद संयुक्त राष्ट्र ने एक या अधिक देशों को अपने स्थान पर कार्रवाई करने का आदेश दिया। उतना संतोषजनक तो नहीं लेकिन 1950 में कोरिया इसका उदाहरण है। 1950 में जब उत्तरी कोरिया ने दक्षिण कोरिया पर आक्रमण कर वहाँ से हटने से इनकार कर दिया तो संयुक्त राष्ट्र ने उत्तरी कोरिया के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई का आदेश दिया। अपने मतलब से अमेरिका अपने मित्र राष्ट्रों के साथ दक्षिण कोरिया को बचाने के लिए तैयार ही था। संयुक्त राष्ट्र ने अमेरिका की इस भावना को सहमति दी और उत्तरी कोरिया को दक्षिणी कोरिया से हटाने के लिए अधिकृत किया। संयुक्त राष्ट्र के ध्वज के साथ अमेरिका ने उत्तरी कोरिया के आक्रमण को समाप्त कर दक्षिण कोरिया की स्वतंत्रता को पुनःस्थापित किया।

करीब चार दशक बाद संयुक्त राष्ट्र ने फिर अमेरिका और उसके मित्र राष्ट्रों को अधिकृत किया कि कुवैत को इराकी कब्जे से छुड़ाए। इस प्रकार 1991 में पहला खाड़ी युद्ध हुआ। इराक की हार से इसकी समाप्ति हुई। यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका के नेतृत्व में खाड़ी युद्ध पहला युद्ध था।

अमेरिकी-सोवियत शीतयुद्ध की समाप्ति से संयुक्त राष्ट्र को शांति स्थापना में काफी सहायता मिलेगी, ऐसी उम्मीद थी। दुर्भाग्यवश ये सारी गतिविधियां अमेरिका की छत्र-छाया में होने लगीं। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की चाहत को नजरंदाज कर कोई काम नहीं कर सका। लाइबेरिया, सोमालिया, तत्कालीन युगोस्लाविया आदि में जब नागरिक व जातीय संघर्ष के खतरे बढ़े तो संयुक्त राष्ट्र को अमेरिका या उसके मित्रों की सहायता लेनी पड़ी। खाड़ी युद्ध के बाद दस मौकों पर संयुक्त राष्ट्र ने शक्ति के प्रयोग को अधिकृत किया। अमेरिका ने सोमालिया (1992), बौस्निया (1993), हैति (1994) और लाइबेरिया (2003) आदि में



राजनीति विज्ञान

बहुराष्ट्रीय सेनाओं का नेतृत्व किया। इसके अतिरिक्त आस्ट्रेलिया और फ्रांस को भी कहा गया कि वे अपनी सेनाएं भेजकर क्रमशः पूर्वी तिमोर और रॉवांडा में शांति स्थापित करें। इन सैनिक कार्रवाइयों के विषय में बहुत से प्रश्न उठे हैं और इससे संयुक्त राष्ट्र की छवि प्रभावित हुई है। इसीलिए संयुक्त राष्ट्र सैनिक कार्रवाई की स्वीकृति देने में सतर्कता बरतता है। संयुक्त राष्ट्र ने 2003 में अमेरिका को इराक के विरुद्ध युद्ध की अनुमति नहीं दिया। यह दूसरी बात है कि संयुक्त राष्ट्र के बिना अमेरिका इराक पर आक्रमण किया।

31.5 शांति बहाली गतिविधियां

सैन्य अधिकार की तुलना में शांति कायम रखना संयुक्त राष्ट्र का विश्वशांति के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है। संयुक्त राष्ट्र के निर्माण के समय हालांकि यह महत्वपूर्ण गतिविधि नहीं सोची गई थी। संयुक्त राष्ट्र की शांति कायम रखने की पहली ऐसी गतिविधि 1948 में शुरू हुई जब संस्था ने सैन्य निरीक्षकों का एक छोटा सा दल पहले अरब-इजरायल युद्ध के बाद शांति को सुनिश्चित करने के लिए भेजा। तब से अब तक शांति की पुनःस्थापना या सुनिश्चितता के लिए अब तक चार महादेशों अफ्रीका, एशिया, यूरोप और दक्षिण अमेरिका में ऐसे साठ शांति बहाली अभियान हो चुके हैं। दो ऐसे अभियानों ने भारत और पाकिस्तान के बीच शांति कायम की।

संयुक्त राष्ट्र के सैन्य निरीक्षक समूहों, (यूएनओजीआईपी) की स्थापना भारत और पाक में जनवरी 1949 में दोनों देशों के बीच कश्मीर मुद्दे पर हुए बड़े विवाद के बाद हुई थी। निरीक्षक मौजूदा समय तक लगातार अपने काम में लगे हैं। भारत और पाक के बीच 1965 की जंग के बाद सितंबर 1965 में संयुक्त राष्ट्र भारत-पाक निरीक्षण समिति का गठन किया गया जो मार्च 1966 तक जारी रही।

संयुक्त राष्ट्र के शांति कायम रखने के काम में कुछ यादगार मोड़ हैं। उदाहरण के लिए 1956 में 6,000 की संख्या वाली मजबूत सेना जो संयुक्त राष्ट्र आपातकालीन बल के नाम से जानी जाती थी, ने बिना एक भी गोली चलाए मिस्र से विदेशी सेनाओं को बाहर निकाल दिया। 1960 में भी इससे बड़ी सेना ने एक नव स्वतंत्र राष्ट्र काँगो को टूटने से बचाया। 1993 में इस तरह का एक बड़ा अभियान हुआ जो कंबोडिया के प्रशासन को लेकर था और वहां प्रजातांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार का गठन हुआ। 1990 में शीतयुद्ध की समाप्ति ने अचानक शांति कायम रखने के अभियानों में तेजी ला दी। कुछ काफी सफल रहे तो कुछ को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। असफल क्षेत्रीय अभियानों के उदाहरण पूर्व यूगोस्लाविया, सोमालिया और रवांडा हैं। संयुक्त राष्ट्र की शांति कायम रखने की इस पूरी कोशिश का मूल्य तब समझ में आया, जब 1988 में शांति रक्षक सेना को नोबल शांति पुरस्कार मिला।

संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में सेना और नागरिक समूहों के निष्पक्ष व्यक्तियों द्वारा संयुक्त राष्ट्र की कमान के तहत कार्य किए जाते हैं। उनका प्रमुख कार्य अहिंसात्मक तरीके से युद्धरत देशों को लड़ने से रोकना और युद्ध विराम को लागू करवाने में उन देशों की सहायता करना है। ये सैनिक एक ऐसा वातावरण बनाते हैं ताकि जंग कर रहे देश अपने विवादों को सुलझा सकें। मूलतः वे इसलिए भेजे जाते हैं ताकि वे उन विवादों को सुलझा या नियंत्रण में ले सकें जो विवाद देशों के बीच हैं और कभी-कभार किसी एक देश में एक-दूसरे के खिलाफ समूहों के विपरीत भी हैं। संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना हल्के हथियार रखती है और केवल आत्मरक्षा में कम से कम ताकत का प्रयोग करने की हिदायत उन्हें दी गई होती है।



पाठगत प्रश्न 31.2

रिक्त स्थान भरिए :

- (क) शांति और सुरक्षा की व्यवस्था के लिए संयुक्त राष्ट्र को एकसे लैस होना चाहिए था जो सदस्य देशों द्वारा पूरा किया जाता।
- (ख) संयुक्त राष्ट्र ने को इसकी अनुमति दी कि उत्तर कोरिया के खिलाफ वह सैन्य कार्रवाई करे।
- (ग) संयुक्त राष्ट्र ने इससे मना किया कि वह के अनुरोध को मान कर इराक के खिलाफ एक-दूसरा युद्ध 2003 में छेड़ दे।
- (घ) आज तक करीबशांति कायम करने के लिए अभियान संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व के कई सारे देशों में किए गए हैं ताकि शांति की पुनर्स्थापना की जा सके।
- (ङ.) 1993 में के प्रशासन का भार एक बड़े अभियान ने संयुक्त राष्ट्र में काम किया।

31.6 निरस्त्रीकरण गतिविधियां

यह माना गया था कि नरसंहार के हथियारों का उत्पादन और भंडारण एक ढाल के रूप में शांति सुनिश्चित करेगा। शांति और सुरक्षा तो दूर की बात रही, इन हथियारों ने दुनिया को एक खतरनाक स्थान बना दिया है। नाभिकीय और अन्य खतरनाक हथियार मानवता के अस्तित्व को ही चुनौती देते हैं। यदि इस दुनिया में एक बार नाभिकीय युद्ध छिड़ जाए, तो न सिर्फ युद्धरत देशों की आबादी ही, बल्कि पूरी पृथ्वी पर फैले मनुष्य प्रभावित होंगे और उनकी मौत हो जाएगी। जो बचेंगे वे धीरे-धीरे दर्द सहते हुए मरेंगे। इसलिए पृथ्वी पर जीवन को संरक्षित करना निरस्त्रीकरण के लिए प्राथमिक और अनिवार्य कारक होना चाहिए। उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि निरस्त्रीकरण से हथियार उत्पादन में लगने वाली भारी धनराशि को दुनिया के गरीब और जरूरतमंद लोगों की जीवन स्थितियां सुधारने की ओर प्रवृत्त करने की संभावना बनती है।

अपनी स्थापना से ही संयुक्त राष्ट्र ने निरस्त्रीकरण में सक्रिय दिलचस्पी दिखाई है और उसके प्रयासों से कई निरस्त्रीकरण संधियां प्रभाव में आई हैं। इसमें कुछ संधियां बेशक विवादास्पद हैं, मसलन 1968 की परमाणु अप्रसार संधि। इस संधि के तहत यह व्यवस्था की गई है कि जिन देशों के पास परमाणु हथियार नहीं हैं वे उन्हें हासिल न करें, जबकि जिनके पास पहले से ये मौजूद हैं उन पर कोई प्रतिबंध न लगाया जाए। इस भेदभाव का विरोध करने के लिए भारत ने इस पर दस्तखत करने से मना कर रखा है।

संयुक्त राष्ट्र महा सभा ने निरस्त्रीकरण की आवश्यकता की ओर दुनिया का ध्यान खींचने के लिए तीन विशेष सत्र बुलाए जिनमें पारंपरिक और नाभिकीय हथियारों में कटौती करने के दवाब पर सबकी आम राय बनाने की कोशिश की गई, लेकिन शीतयुद्ध के तनाव के चलते कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आ सका।

शीतयुद्ध की समाप्ति ने नरसंहारक हथियारों पर नियंत्रण और कटौती की ओर गंभीर पहल की उम्मीदें जगाईं। महा सभा ने सितंबर 1996 में सीटीबीटी यानी व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि के घोषणापत्र को स्वीकार किया। सीटीबीटी के प्रभाव में आने की संभावना बहुत छीण है क्योंकि भारत समेत कई अन्य देशों ने इसे एक विकृत संधि करार देते हुए दस्तखत करने से मना कर दिया और यह शर्त रखी कि इससे पहले वे पांच देश निरस्त्रीकरण का वादा करें जिनके पास नाभिकीय हथियार है।

वैकल्पिक मॉड्यूल-1

विश्व व्यवस्था एवं संयुक्त राष्ट्र



टिप्पणी

राजनीति विज्ञान

इसका एक सकारात्मक पहलू यह रहा कि निरस्त्रीकरण पर संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों ने 1997 में बारूदी सुरंगों पर प्रतिबंध लगाने में मदद की तथा 1993 में रासायनिक हथियारों के मौजूदा भंडारों को अंतर्राष्ट्रीय देख-रेख में समाप्त करने में मदद की। संयुक्त राष्ट्र ने वास्तव में एशिया, अफ्रीका और अन्य जगहों पर लाखों की संख्या में बिछी बारूदी सुरंगों को हटवाने में बड़ी भूमिका निभाई तथा रासायनिक हथियार के मौजूदा भंडार को समाप्त किए जाने की प्रक्रिया का पर्यवेक्षण किया। संयुक्त राष्ट्र ने इराक में नब्बे के दशक में रासायनिक और जैविक हथियारों के विनाश में भी भूमिका अदा की।



पाठगत प्रश्न 31.3

रिक्त स्थान भरिए :

- (क) हथियारों ने पृथ्वी को एक खतरनाक स्थान बना दिया है।
- (ख) इस पृथ्वी पर जीवन की रक्षा की प्राथमिकता और अनिवार्य होना ही की आवश्यकता के पीछे एक कारण है। हथियारों की होड़ से का गलत जगह इस्तेमाल होता है जिसे आर्थिक विकास के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- (ग) ने नाभिकीय हथियार सम्पन्न देशों और इससे रहित देशों के बीच भेदभाव किया।
- (घ) महासभा ने निरस्त्रीकरण पर विशेष सत्र बुलाए।
- (ङ.) महासभा ने सीटीबीटी को में स्वीकृति दी।



आपने क्या सीखा

संयुक्त राष्ट्र का सर्वोच्च लक्ष्य दुनिया की शांति है और वह इसकी प्राप्ति के लिए निरन्तर विभिन्न गतिविधियों में संलग्न रहता है। संयुक्त राष्ट्र ने दर्जनों संघर्षों में अपनी सेवाएं एक मध्यस्थ के रूप में मुहैया कराई हैं जिनमें वह कभी सफल रहा है और कभी विफल। संयुक्त राष्ट्र ने हमेशा देशों के बीच शांति कायम रखने के लिए ऐसे तरीकों को प्राथमिकता दी है जो अबाध्यकारी हो, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उसने उन देशों के मामले में कुछ न किया हो या करने में अक्षम रहा है जिन्होंने उसकी सलाह को ठुकराया है और विश्व शांति के लिए खतरा बन गए हैं। संयुक्त राष्ट्र के लिए विश्व शांति का लक्ष्य इतना महत्वपूर्ण है कि इसके संस्थापकों ने इस संगठन को यह अधिकार दिया कि वह अपने किसी सदस्य देश पर विदेशी कब्जे को पलटने या उसे रोकने के लिए सैन्य बल का भी इस्तेमाल कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र की किसी भी गतिविधि की तुलना में शांति बहाली की गतिविधियां वास्तव में विश्व शांति में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह महत्वपूर्ण गतिविधि संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के वक्त नहीं सोची गई थी। संयुक्त राष्ट्र ने शुरू से ही इस तकनीक का इस्तेमाल किया। कुछ शांति बहाली अभियान सफल रहे तो अन्य में दिक्कतें पैदा हुईं। अपनी स्थापना के समय से ही इस संस्था में निरस्त्रीकरण में सक्रिय दिलचस्पी दिखाई है और इसके प्रयासों से कई निरस्त्रीकरण संधियां प्रभाव में आई हैं।



पाठांत प्रश्न

1. संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों के ऐसे कौन से चार मुख्य पहलू हैं जिन्होंने विश्व शांति में मदद की?
2. संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता के कुछ उदाहरणों की चर्चा करें।



3. संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए जाने वाले विभिन्न किस्म के असैन्य प्रतिबंध कौन-कौन से हैं?
4. अपनी सैन्य कार्रवाइयों को अंजाम देने के लिए संयुक्त राष्ट्र के पास अपना सैन्य बल क्यों नहीं है?
5. शांति बहाली क्या होती है? ऐसे अभियान क्यों भेजे जाते हैं?
6. संयुक्त राष्ट्र द्वारा निरस्त्रीकरण के लिए किए गए प्रयासों के कुछ पहलुओं पर चर्चा करें।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1

- (क) सत्य
- (ख) असत्य
- (ग) सत्य
- (घ) सत्य
- (ङ.) असत्य

31.2

- (क) स्थायी सेना
- (ख) अमेरिका
- (ग) अमेरिका
- (घ) 60
- (ङ.) कंबोडिया

31.3

- (क) नाभिकीय
 - (ख) निरस्त्रीकरण संसाधन
 - (ग) अप्रसार संधि
 - (घ) तीन
5. 1996

पाठान्त प्रश्नों के लिए संकेत

1. खंड 31.1 देखें
2. खंड 31.2 देखें
3. खंड 31.3 देखें
4. खंड 31.4 देखें
5. खंड 31.5 देखें
6. खंड 31.6 देखें